हिन्दी शिक्षण (Hindi Teaching)

- बालकों का शब्दकोश : चित्रात्मक होना चाहिए।
- इकाई शिक्षण व्यवस्था में : कक्षा तीन समूहों में विभाजित होती है।
- भाषा कौशल : चार प्रकार होते हैं।
- सृजनात्मकता : पठन पाठक प्रक्रिया का अंतिम चरण है।
- निबंध लेखन : लिखित अभिव्यक्ति का साधन है।
- श्रुतिलेख : सुन्दर लेखन अभ्यास के लिए आवश्यक है।
- श्रुतिलेख का महत्व : वर्तनी सुधार।
- कवि सम्मेलन : कविता में रुचि जाग्रति का सशक्त माध्यम।
- प्राथमिक कक्षाओं के लिए शिक्षण विधि : चित्र वर्णन, अनुकरण प्रश्नोत्तर शब्द, शब्द प्रदान प्रणाली।
- भाव बिम्ब : भाषा सीखने के मनोविज्ञान क्रम का अंतिम चरण।
- ध्वनि : शब्द का आधार।
- लेखन में दोष : स्वरों की मात्राओं में अशुद्धि।
- मौन वाचन का उद्देश्य : विषय की ग्रहण शक्ति में वृद्धि।
- दो : वाचन के प्रकार।
- सस्वर वाचन : भाषा शिक्षण की प्रथम सीढ़ी।
- पठन में आता है : वर्ण व शब्द पठन, वाक्य पठन तथा अनुच्छेद पठन।
- शुद्ध लेखन आता है : शुद्ध पठन से।
- प्रश्नोत्तर विधि : प्रारम्भिक कक्षा में कहानी पाठ के विकास में उपयोगी।
- पठन का पहला स्तर है : चित्र पठन।
- सस्वर पठन : कविता, गीत तथा एकांकी में उपयोगी है।
- फ्लैश कार्डो से सिखाये जाते हैं : वर्णन, वाक्यों की संरचना तथा वर्तनी।
- विश्लेषण (आगमन) विधि : व्याकरण शिक्षण की सर्वाधिक सरल एवं सुग्राह्य विधि।
- प्रश्नोत्तर विधि : खण्डानव्य विधि को कहा जाता है।

हिन्दी की प्रमुख बोलियाँ

- हिन्दी की पाँच प्रमुख बोलियाँ हैं –

1. कौरवी (खड़ी बोली)
2. बाँगरु (हरियाणवी)
3. ब्रज
4. कन्नौजी
5. बुंदेली

- **अकारान्तक शब्द बहुल –** 'हरियाणवी और दक्खिनी। इसमें खड़ी बोली सर्वाधिक विकसित है।
- **ओकारान्त शब्द बहुल –** ब्रज, कन्नौजी और बुंदेली। इनमें ब्रज भाषा सर्वाधिक विकसित है।
- व्याकरणानुसार यह योग रुढ़ शब्द है।

हिन्दी भाषा का विकास

- **आदि काल (1000 ई. से 1500 ई. तक) :** हिन्दी भाषा का आदि काल राजनैतिक दृष्टि से अस्थिर काल था।
- प्रारम्भिक व्याकरण हेमचंद्र के द्वारा लिखा – शब्दानुशासन।
- **मध्यकाल (1500 ई. से 1800 ई. तक) –** यह काल हिन्दी भाषा और साहित्य का स्वर्णकाल कहलाता था।
- **आधुनिक काल (1800 ई. से वर्तमान तक) –** इस अवधि को खड़ी बोली हिन्दी का काल कहा जा सकता है। इस अवधि में साहित्यिक दृष्टि से ब्रज भाषा और अवधी जन मानस से दूर होकर विशिष्ट वर्ग की भाषा बन गई।

भाषा का वैज्ञानिक स्वरुप

भाषा – भाषा भाव, विचार तथा अनुभवों को व्यक्त करने का सांकेतिक माध्यम है। भाषा के निर्माण के अक्षर एवं ध्वनियों से निर्मित शब्दों का विशेष महत्व है। व्याकरण में एक या एक से अधिक अक्षरों से बनी स्वतंत्र तथा सार्थक ध्वनि को शब्द कहते हैं।

हिन्दी भाषा नादानुगामिनी भाषा है, क्योंकि इसके लेखन और उच्चारण में साम्य है।

- पतन्जलि के अनुसार मनुष्यों के द्वारा व्यक्त वाणी को ही भाषा कहते हैं।
- भाषा के दो रुप होते हैं –

1. उच्चारित या मौखिक भाषा
2. लिखित भाषा

लिपि – भाषा के विकास के साथ बोली को या ध्वनि का लिखित चिन्ह या वर्ण के द्वारा प्रस्तुत करने की व्यवस्था लिपि कहलाती है। हिन्दी की लिपि देवनागिरी है।

शब्द

भाषा के निर्माण में शब्द सर्वाधिक सार्थक एवं महत्वपूर्ण तत्व है।

- **शब्द के भेद –** शब्द तीन प्रकार के होते हैं – रुढ़, यौगिक, यौग रुढ़।
- **रुढ़ शब्द :** जिसको विभाजित नहीं किया जा सकता है। जैसे – हाथी, गाय, घोड़ा, नुपूर।
- **यौगिक शब्द –** यह दो शब्दों के योग से या प्रकृति, प्रत्यय के योग से निर्मित होते हैं। जैसे – विद्यालय, भारतीय।
- **योग रुढ़ शब्द –** यह शब्द यौगिक होते हुए भी रुढ़ के रुप में सामाजिकों में प्रसिद्ध है। जैसे – कुशल, पंकज।
- **शब्दों का भिन्न प्रकल्प :** शब्दों का पुनः तत्सम, तद्भव, देशज, विदेशी, संकर (द्विज) तथा अनुकरणात्मक प्रकल्पों में वर्गीकृत किया गया है।
- **वर्णादि विचार –** भाषा के वैज्ञानिक अध्ययन में अनेक ध्यातव्य बिन्दुओं में वर्ण, शब्द और वाक्य का महत्वपूर्ण स्थान है।
- **वर्ण –** भाषा की वह इकाई जिसके बिना शब्द तथा वाक्य का निर्माण संभव नहीं। वर्ण की उत्पत्ति में ध्वनि का महत्वपूर्ण स्थान है।
- **वाक्य विचार –** वाक्य ऐसे ध्वनि समूह को कहते हैं जिस ध्वनि से भाव एवं विचार की पूर्णतः स्पष्टता झलकती हो। वाक्य में आकांक्षा, योग्यता और सन्निधि ये आवश्यक तत्व हैं।

भाषा सीखने का स्वाभाविक व मनोवैज्ञानिक क्रम

सुनना → बोलना → पढ़ना → लिखना

हिन्दी शिक्षण के उद्देश्य

1. **ज्ञानात्मक उद्देश्य –** भाषा ज्ञान प्राप्ति का एक सशक्त साधन है। ज्ञानात्मक उद्देश्य में निम्नलिखित का समावेश किया जा सकता है:

– भाषा के तत्वों का ज्ञान, यथा–उच्चारण, शब्द रचना एवं भेद, वर्तनी, मुहावरे।

- विषयवस्तु का ज्ञान, यथा–लेखक के विचार, सांस्कृतिक मूल्य, घटनाएँ, चरित्र–चित्रण; व्यावाहारिक तथ्य।
- रचनाओं के विभिन्न रुपों का ज्ञान, यथा–गद्य, पद्य, पत्र, वार्तालाप और सार–संक्षेप।
- साहित्य के विभिन्न विद्याओं का ज्ञान, यथा–काव्य, कहानी, नाटक, एकांकी, निबंध, जीवनी, रेखाचित्र, संस्मरण।

◆ **अवबोध** – विद्यार्थी शब्दों, वाक्यांशों का गूढ़ार्थ, निहितार्थ, आदि सभी प्रकार के गहनताओं को समझता है।

◆ **रुचि** – अधिगमकर्ता, साहित्य की विभिन्न विधाओं में रुचि लेता है।

◆ **मनोवृत्ति** – साहित्य पढ़ने के पश्चात विद्यार्थी की भावना में परिवर्तन आता है। यही उसकी अभिवृत्ति या मनोवृत्ति है।

◆ **ज्ञानापयोग** : अपने अर्जित भाषायी ज्ञान का उपयोग विभिन्न क्षेत्रों में एवं साहित्य विधाओं में करता है।

◆ **कौशल** – विद्यार्थी यथार्थो में अपनी सूझबूझ से किसी रचना को नवीन रुप प्रदान करता है अथवा नई रचना करता है।

2. **कौशलात्मक उद्देश्य** – भाषा शिक्षण के कौशलात्मक उद्देश्य में मुख्यतः दो कौशल निहित है।

◆ **अभिव्यक्ति** : भावों तथा अनुभवों को व्यक्त करने के लिए भाषा एक सशक्त साधन है।

◆ अभिव्यक्ति के प्रकार लिखकर, बोलकर

◆ **ग्रहण** – ग्रहण करने की शक्ति दो प्रकार से होती है : सुनकर ग्रहण करना और पढ़कर ग्रहण करना।

3. **सौन्दर्यात्मक उद्देश्य** : प्रत्येक भाषा का अपना साहित्य होता है। इस उद्देश्य की प्राप्ति तभी सम्भव है जब विद्यार्थी साहित्य की रसानुभूति करने योग्य हो जाए।

4. **अभिवृत्यात्मक उद्देश्य** – इसमें निम्नलिखित बातें सम्मिलित हैं:
   भाषा और साहित्य में रुचि
   शब्द प्रवृत्तियों का विकास

5. **रसात्मक एवं समीक्षात्मक उद्देश्य**

प्राथमिक स्तर

प्राथमिक स्तर पर हिन्दी शिक्षण के उद्देश्य –

◆ अक्षर ज्ञान देना एवं उच्चरण की शुद्धता।

◆ वाचिक कुशलता विकसित करना।

◆ भाषा को सुनकर तथा पढ़कर समझने की कुशलता विकसित करना।

◆ शब्द कोष का सक्रिय प्रयोग करना।

◆ लिपि ज्ञान एवं लेखन के विकास पर विशेष बल।

◆ कविताओं के भावनुकूल वाचन तथा उनकी रसानुभूति के योग्य बनाना।

◆ अभिनय, अनुकरण, गायन और स्वतंत्र अध्ययन आदि विभिन्न रुचिओं की ओर प्रवृत्त करना।

उच्च प्राथमिक स्तर

◆ साहित्य के विभिन्न अंगों का ज्ञान देना।

◆ वाद–विवाद व अभिनय आदि की प्रवृत्ति का जाग्रत करना।

◆ भाषा शुद्धता के लिए व्याकरण का प्रारम्भिक ज्ञान कराना।

◆ स्वाध्याय की प्रवत्ति को विकसित करना।

◆ मौखिक एवं लिखित अभिव्यक्ति में पूर्ण शुद्धता।

हिन्दी शिक्षण की आवश्यकता

◆ आत्म–अभिव्यक्ति की कुशलता प्राप्त करना।

◆ प्रारम्भिक भाषा अस्थिर होती है, क्योंकि वह लिपिबद्ध नहीं होती यथा – 'अनार लाल है', 'अनार के दाने लाल हैं' में भेद है।

◆ बेलार्ड के अनुसार मातृभाषा माता से सीखी हुई भाषा की संकुचित सीमाओं से निकालकर मातृभूमि पर बोली जाने वाली भाषा है।

मातृभाषा शिक्षण का महत्व

◆ अर्थग्रहण एवं अभिव्यक्ति का सरलतम साधन है।

◆ ज्ञानार्जन का भी सरलतम साधन है।

◆ सामाजिक संगठन का प्रभावी आधार है।

◆ राष्ट्रीय एकता का आधार है।

राष्ट्रभाषा के रुप में उद्देश्य

◆ राष्ट्रीय भावना का विकास करना।

◆ प्रान्तीयता एवं भाषावाद की संकीर्ण सोच का अवरोध करना।

◆ विद्यार्थियों में दूसरे विचारों को राष्ट्रभाषा के माध्यम से ग्रहण करने की योग्यता विकसित करना।

◆ अपने विचारों को दूसरों के सम्मुख राष्ट्रीय भाषा में अभिव्यक्त करना।

◆ विद्यार्थी का प्रदेश में जाने पर भाषायी कठिनाई के निवारण हेतु।

◆ देश में सभी स्थानों पर राजकार्य एक ही भाषा में हो, इसकी योग्यता विकसित करना।

◆ भाषा की एकता से राष्ट्र की एकता का विकास करना।

हिन्दी भाषा शिक्षण के सिद्धांत

◆ **पूर्व ज्ञान की जाँच** – अध्यापन आरम्भ करने से पूर्व विद्यार्थी के पूर्व ज्ञान का शिक्षक को पता होना चाहिए। ऐसा न होने पर अध्यापक तथा विद्यार्थियों के मध्य दूरी बनी रहती है।

◆ **पूर्व ज्ञान से सहसम्बन्ध** – इसमें छात्र में अग्र ज्ञान की उत्सुकता बनी रहती है।

◆ **सुनियोजित पाठ योजना** – पाठ अध्यापन की योजना मस्तिष्क में होनी चाहिए।

◆ **बाल केन्द्रित अध्यापन** – पठन सामग्री विद्यार्थियों के पूर्व अनुभवों एवं उनके वातावरण और रुचि के अनुसार होनी चाहिए तथा पठन सामग्री जीवन की आगामी जटिलताओं के निवारण में उपयोगी हो। यदि पाठ कठिन है तो उसका विभाजन इकाईयों में होना चाहिए ताकि विद्यार्थियों पर अतिरिक्त भार नहीं पड़े।

◆ **विद्यार्थियों की साझेदारी** – विद्यार्थियों को पाठ से सम्बन्धित पूर्व अनुभव के प्रश्न पूछ कर उनकी प्रतिक्रिया का भान कर अध्यापन कार्य करवाना चाहिए।

◆ **प्रयोग की व्यवस्था** – अध्यापन कार्य में ऐसी व्यवस्था होनी चाहिए कि विद्यार्थी अध्यापक का अनुकरण करके कुछ नया प्रयोग करें। जैसे उच्चरण, लेखन, मौखिक अभिव्यक्ति जिनमें निरंतर अभ्यास की आवश्यकता होती है। इस अभ्यास से बालक भाषा पर अधिकार कर सकेगा।

◆ **वैयक्तिक भिन्नता** – कक्षा शिक्षण में अध्यापक को वैयक्तिक भिन्नता का ध्यान रखना चाहिए।

◆ **बहुकोणीय प्रयास** – भाषा के समुचित विकास के लिए अध्यापक को समय दृष्टिकोण अपनाना चाहिए पाठ्यक्रम के अतिरिक्त सहगामी क्रियाओं का आयोजन करने की योग्यता एवं कुशलता अध्यापक में होनी चाहिए।

◆ **भाषाई दृष्टिकोण** – भाषा शिक्षण के शिक्षक में भाषाई अभिव्यक्ति होना परम आवश्यक है। भाषा को सीखने में क्रम का ध्यान रखना चाहिए। भाषा सीखने का क्रम है।

EduBull.com

श्रवण का अभ्यास → बोलचाल की शिक्षा → वाचन की शिक्षा → लेखन की शिक्षा

- **मनोवैज्ञानिक आधार** – अध्यापक को भाषा शिक्षण में मनोवैज्ञानिक आधारों का अनुशीलन व अनुगमन करना चाहिए।

(अ) **ज्ञात से अज्ञात की ओर** – अध्यापन में पूर्व अनुभवों का उपयोग कर अध्यापन करना चाहिए। भाषा में शब्दों का अर्थ स्पष्ट करने तथा व्याकरण के नियमों का अर्थ करने में यह सूत्र उपयोगी है।

(ब) **सरल से कठिन की ओर** – लिखना सीखने के लिए पहले सरलता से बनने वाले स्वर या व्यंजन सीखने चाहिए। इसी प्रकार विचारात्मक तथा भावात्मक निबन्ध लिखवाने से पहले वर्णात्मक निबन्ध लिखने की कुशलता विद्यार्थी में होनी चाहिए।

(स) **मूर्त से अमूर्त की ओर।**

(द) **विशेष से सामान्य की ओर** – विद्यार्थी प्राथमिक कक्षाओं में पशु का अर्थ नहीं जानता, किन्तु वह गाय, भैंस व बकरी को पहचानता है। अतः इनको पशु का अर्थ समझाना चाहिए। व्याकरण के नियम भी इस विधि से समझाये जा सकते हैं।

(य) **आगमन से निगमन की ओर** – उदाहरण द्वारा नियम निकालने की विधि को आगमन विधि कहते हैं। व्याकरण के नियम समझने में वह विधि अत्यंत उपयोगी है।

हिन्दी अध्यापक के गुण

(अ) सामान्य

हिन्दी शिक्षक में आकर्षक व्यक्तित्व, मधुरभाषी, प्रखर बुद्धि, सहनशील, उदार हृदयी, सच्चरित्र, सहृदय, सात्विक आहारी आदि सामान्य गुण होने चाहिए।

(ब) विशिष्ट

- शुद्ध उच्चारण।
- भाषण निष्णात।
- सुन्दर लेखन।
- स्वाध्यायी।
- शोधवृत्ति।
- साहित्य की नवीन विधाओं का ज्ञान।
- व्याकरण का ज्ञान।
- संदर्भ सामग्री का ज्ञान।
- शिक्षण विधियों का ज्ञान।
- मूल्यांकन विधियों का ज्ञान।

भाषायी कौशल

भाषाई कौशलों के विकास हेतु उपयुक्त विधि से इनका शिक्षण कराना आवश्यक है।

श्रवण शिक्षण कौशल

इस कौशल में अध्यापकों के द्वारा छात्रों के लिए शब्दों के श्रवण पर जोर दिया जाता है जिससे छात्र अध्यापकों के द्वारा उच्चारित शब्दों को सुनकर सही उच्चारण व लेखन कर सके।

बोलचाल की शिक्षा

भाषा शिक्षण की प्रथम सीढ़ी बोलचाल की शिक्षा है। प्रारम्भिक कक्षा में बालक सामाजिक एवं बौद्धिक दृष्टि से भिन्न–भिन्न परिवारों से आता है। ऐसे में उसकी पैतृक बोलियाँ भिन्न–भिन्न होती है। ऐसे में पठन से पहले मौखिक मानक हिन्दी का ज्ञान देना आवश्यक है। क्योंकि वाचन तथा लेखन आरम्भ करने से पूर्व बालक का शब्द भंडार एवं उच्चारण शुद्ध होगा तो आगामी शिक्षा में सुगमता रहेगी।

प्राथमिक कक्षाओं में बोलचाल की भाषा के उदेद्श्य :

- बिना झिझके प्रवाह से बोलना
- हिन्दी के मानक रुपों का प्रयोग करने की योग्यता का विकास करना
- घटनाओं का मौखिक वर्णन करने की योग्यता का विकास
- परिचित शब्दों का शुद्ध उच्चारण
- नये सीखे शब्दों का उचित प्रयोग

उच्च प्राथमिक कक्षाओं में बोलचाल की शिक्षा के उद्देश्यः

- स्वरों एवं व्यंजन – समूहों का शुद्ध उच्चारण करना।
- बलाघात, अनुतान और प्रवाह के साथ वाचन।
- विचारों और भावों को शुद्ध, स्पष्ट, रोचक और प्रभावपूर्ण तरीके से व्यक्त करने की योग्यता विकसित करना।
- व्यवस्थित तरीके से वांछित सामग्री को प्रस्तुत करने की योग्यता का विकास।
- वाचन में स्थानीय बोली के प्रभाव से मुक्त करना।

माध्यम कक्षाओं में बोलचाल की शिक्षा के उदेद्श्य :

- शुद्ध उच्चरण, बल एवं अनुतान तथा सहजता एवं प्रवाह के साथ बोलना।
- उपयुक्त भाषा प्रयोग।
- भावों का सही अभिव्यक्तिकरण।
- प्रतिक्रिया को शिष्ट एवं संयत् भाषा में व्यक्त करना।
- वाद–विवाद एवं परिचर्चा में भाग लेना।

मौखिक अभिव्यक्ति के रुप

- **वार्ता** – औपचारिक व अनौपचारिक वार्ता की कुशलता।
- **वर्णन** – घटनाओं तथा तथ्यों को मौखिक रुप से बताना।
- **चित्रण** – किसी घटना या व्यक्ति को शब्दजाल के माध्यम से मूर्त रुप में प्रकट करना।
- **भाषण** – श्रोता के मस्तिष्क और हृदय में भावों को आंदोलित करना।
- **इतिवृत्त** – किसी सुनी या देखी गई घटना का बिना किसी व्यक्तिगत स्वार्थ या दुर्भावना के यथा तथ्य विवरण प्रस्तुत करना।

उच्चारण की शिक्षा

सूक्ष्म उच्चारण भेद से अर्थ का अनर्थ हो जाता है। शुद्ध उच्चारण से भाषा कर्णप्रिय होती है।

- **उच्चारण शिक्षण कौशल** – इस कौशल में शुद्ध उच्चारण पर जोर दिया जाता है। वर्णो की ध्वनियों की शुद्धता से ही उच्चारण कौशल का शिक्षण हो पाता है।

  उच्चारण दो प्रकार का होता है – सस्वर उच्चारण और मौन उच्चारण।
- **सस्वर उच्चारण के लाभ** – संकोट दूर होना, आत्मविश्वास जागना, शुद्ध उच्चारण सीखना, आरोह–अवरोह का ध्यान होना, मन का आल्हादित होना।

  नोट – पद्य, गीत, दोहा, सौरठा, चौपाई, श्लोक आदि के उच्चारण के लिए सस्वर उच्चारण युक्तियुक्त है।
- **मौन उच्चारण के लाभ** – एकाग्रता, थकान नहीं होना लाभ है।

  हानि – वही संकाच नहीं मिटना, आत्मविश्वास नहीं जागना आदि नुकसान है।

  मौन उच्चारण प्रायः गद्य, उपन्यास, नहीं आदि के लिए उपयुक्त है।

उपर्युक्त दोनों उच्चारणों में छोटे छात्रों के सस्वर उच्चारण आवश्यक है और बड़े छात्रों के लिए मौन उपन्यास उपयुक्त है।

- छोटे बालकों में उच्चारण सुधार के लिए कौन सा उपाय अधिक प्रभावी सिद्ध होगा –
  उपचारात्मक अभ्यास प्रक्रिया, उदाहरण अभ्यास तथा सरलता से कठिनता के क्रम में अभ्यास।
- अशुद्ध उच्चारण तथा उसके कारणों के आधार पर प्रयुक्त की जाने वाली शिक्षण विधि को कहते हैं – उपचारात्मक शिक्षण विधि।
- बोलकर अभिव्यक्त करने की योग्यता प्राप्त करने के अंतर्गत छात्र –
  शब्दों का शुद्ध एवं स्पष्ट उच्चारण कर सकेगा।

वाचन की शिक्षा

पूर्व श्रुत सार्थक ध्वनियों के प्रतीक शब्दों को पढ़कर उनका अर्थ ग्रहण करना है।

- **वाचन के तत्वः** प्रतीक गुणों को पहचानना, वर्णो के प्रयोग से शब्दों का निर्माण करना, शब्दों को उचित दृष्टि सोपान एवं उचित गति से उच्चरित करना। वाक्यों को सार्थक इकाईयों में बांटकर संदर्भ के अनुसार शब्दों का भाव ग्रहण करना। सामग्री का गन्तव्य स्थिर करना एवं अनुसार व्यवहार करना।
- **वाचन का महत्व :** सामान्य कामचलाऊ जानकारी प्राप्त करने से लेकर गहन अध्ययन तक है क्योंकि यह निरक्षर स्त्री–पुरुषों की ज्ञान–पिपासा को तृप्त करने में उपयोगी साधन है।

विधियाँ

- **संश्लेषणात्मक विधि :** इसके अंतर्गत अक्षर या वर्ण की पहचान पर बल दिया जाता है। इसे अल्फाबेटिकल मैथड भी कहा जाता है।
  इसमें शिक्षण का क्रम होगा – वर्णाक्षर → शब्द → वाक्य
- **चित्र वर्ण विधि :** इसके अंतर्गत विद्यार्थी को ऐसा चित्र दिखाया जाता है जो उसके वातावरण का होता है और वह उसके अर्थ से भी परिचित होता है। चित्र के साथ उस चित्र का ना भी लिख दिया जाता है। यह विधि पूर्ण रुप से मनोवैज्ञानिक है।
- **विश्लेषणात्मक विधि :** इसके अंतर्गत पहले शब्द सीखाएं जाते हैं और फिर शब्द का विश्लेषण करके वर्ण सीखाएं जाते हैं।
- **शब्द से वर्ण विधि :** इस विधि में शब्द के वर्ण पर बल नहीं दिया जाता बल्कि शब्द के वर्णो की पहचान और उनकी ध्वनि के उच्चारण पर बल दिया जाता है।
- **शब्द के पठन :** शब्द से वर्ण विधि को सुधार कर शब्द से पठन नाम दिया गया है। इस विधि के अनुसार शब्द के लिखित रुप की कल्पना भावाक्षर (आइडियोग्रफिक) के रुप में की जाती है। यहाँ वाचन के स्थान पर शब्द के अर्थ पर अधिक बल है।
- **देखो और बोलो विधि :** इस विधि में शब्द के विभिन्न वर्णो का उच्चारण न करके सम्पूर्ण शब्द का उच्चारण किया जाता है।
- **वाक्य विधि :** यह विधि शब्द विधि का विस्तार ही है। इसके अनुसार विद्यार्थियों को एक वाक्य पढ़ने को दिया जाता है, यथा – 'मामा आया'। तत्पश्चात शब्दों का विश्लेषण करवाया जाता है। अगले वाक्यों में कोई नया शब्द जोड़ दिया जाता है और उसका विश्लेषण किया जाता है।

chk

यह अक्षर–बोध की व्युत्क्रम विधि है। इसमें अक्षर–ज्ञान, शब्द ज्ञान और वाक्य कराया जाता है। सर्वप्रथम वाक्य बोला जाता है, उसके पश्चात् शब्द ज्ञान और अन्त में अक्षर का ज्ञान कराया जाता है। इस प्रणाली में शिक्षण का जो क्रम है, वह है – वाक्य → शब्द → वर्णाक्षर।

- **कहानी विधि :** यह विधि विश्लेषणात्मक विधि का विस्तार है। इस विधि में सम्पूर्ण वर्णमाला की वाक्यों से निर्मित द्वारा वाचन शिक्षण दिया जाता है।
  यह विधि वाक्य–शिक्षण विधि का विकसित रुप है।
- **कविता विधि :** इसमें वर्णो को कविता के रुप में याद करा दिया जाता है।
- **सामूहिक पठन विधि :** इस विधि के द्वारा बाल–गीत और संवादों की शिक्षा दी जा सकती है। यह उच्च स्तर के बालकों के लिए अधिक उपयोगी विधि है।
- **साहचर्य विधि :** इस विधि का आविष्कार मैडम माण्टेसरी ने किया था।
- **ध्वनि–साम्य विधि :** इस विधि में यह दोष है कि यह ध्वनियों पर अधिक बल देती है।

सस्वर वाचन

सस्वर वाचन में अध्यापक को छात्र की वाचन सम्बन्धी अशुद्धियों का पता लग जाता है। सस्वर वाचन से थकान अधिक होती है।

सामान्य उदेद्श्य :

- वाचन संबंधी अशुद्धियों एवं त्रुटियों दूर करने का प्रयास करना।
- अर्द्ध–विराम, विराम आदि चिन्हों का उचित ध्यान रखते हुए बालकों को यथास्थान रुकने तथा शुद्धतापूर्वक पढ़ने का अभ्यास कराना।
- बालकों को गति, ताल तथा लय का उचित ज्ञान देना (पद्य पाठों में)।
- बालकों की अभिव्यक्ति में स्पष्टता लाना।
- लेखकों की अनुपस्थिति उनके विचारों से अवगत कराने हेतु।

मौन वाचन

शिक्षार्थी पठन सामग्री के प्रति मन ही मन में प्रतिक्रिया अभिव्यक्ति करते हुए मानसिक तर्क–विर्तक करता है। मौन वाचन से पठन की गति तीव्र हो जाती है एवं एकाग्रता बनती है।

उद्देश्य :

- छात्र पठितांश का वाचन अपनी गति से कर सकता है।
- अवकाश के क्षणों का सदपुयोग करने हेतु मौन वाचन का अभ्यास आवश्यक है।
- विद्यार्थियों को कम से कम समय में अधिक से अधिक विषय–वस्तु को आत्मसात कराना।
- किसी बात को स्वयं समझने हेतु।
- चिन्तन एवं तर्कशक्ति का विकास करने हेतु।
- कक्षा में अन्य छात्रों को व्यवधान पहुंचाए बिना अपनी ही क्षमता एवं योग्यता के अनुसार छात्रों को पाठ्यांश को समझने हेतु प्रयास कराना।
- **वर्णनात्मक लिखित रचनाः** देखे हुए स्थान, यात्रा का वर्णन करना।
- **विवरणात्मक लिखित रचनाः** ऐतिहासिक भवन, धार्मिक स्थल, सांस्कृतिक स्थान विविरण लिखना।
- **सर्जनात्मक लिखित रचना :** लिखित रचना में ऐसे प्रकरण जिन पर चिन्तन करके लिखना चुनाव प्रक्रिया, योजना, देश प्रेम, राष्ट्रीय एकता।
- **तुलनात्मक लिखित रचना :** जैसे ग्राम एवं नगर, तुलसी एवं सूर, देशभक्त एवं राजनीतिक आदि।

निबंध शिक्षण की विधियाँ

- **चित्र वर्णन विधि :** इस विधि के अनुसार विद्यार्थियों के सामने लिखे जाने वाले विषय से सम्बन्धित चित्र दर्शाये जाते हैं।
- **प्रश्नोत्तर विधि :** इस विधि में सर्वप्रथम विद्यार्थियों के सम्मुख चित्र के किसी पहलू पर प्रश्न पूछे जाते हैं और उनका उत्तर प्राप्त किया जाता है।
  इस विधि को सुकरात विधि भी कहते हैं। इस विधि से विद्यार्थियों में चिन्तन शक्ति का विकास होता है।
- **रुपरेखा विधि :** इस विधि के अनुसार निबन्ध का आरम्भ मध्य तथा समापन वाक्याशों की रुपरेखा के माध्यम से किया जाता है। यह विधि सभी स्तरों पर सफलतापूर्वक अपनाई जा सकती है।
- **प्रवचन विधि :** इस विधि में शिक्षक भाषा के बारे में प्रवचन द्वारा पूरी जानकारी विद्यार्थियों के समक्ष रखता है।
  यह विधि माध्यमिक व उच्च कक्षाओं में ही प्रयुक्त की जा सकती है। यह विधि उत्तम विधि नहीं है क्योंकि इसमें विद्यार्थियों की बुद्धि कुंठित होने का डर रहता है।
- **स्वाध्याय (मंत्रणा) विधि :** यह विधि उच्च कक्षाओं के लिए उपयुक्त है। अध्यापक तथा विद्यार्थियों दोनों ही इस विधि में अत्यधिक सक्रिय रहते हैं। इस विधि से लेखन की शैली का निर्माण होता है।
  मन्त्रणा विधि के शिक्षक केवल पथ प्रदर्शन करता है।
- **परिचर्चा विधि या विचार विधि :** यह विधि स्वाध्याय विधि का ही आगामी चरण है। विद्यार्थी इसमें स्वाध्याय करते हैं, सामूहिक चर्चा करते हैं। मौखिक अभिव्यक्ति को लिपिबद्ध रुप देते हैं। इसके उपयोग से विद्यार्थियों में विचारों की स्पष्टता और विषय के प्रतिबद्धता का विकास होता है। इस शैली का प्रयोग उच्च कक्षाओं के लिए उत्तम है।
  प्रवचन, स्वाध्याय तथा परिचर्चा विधि अपनाने पर सभी विद्यार्थी एक साथ कक्षा में निबंध लिखते हैं। इस विधि से स्मरण शक्ति का विकास होता है, नकल करने की आदत छूट जाती है।
- **सूत्र विधि :** इस विधि में छात्रों के लिए कुछ उपयोग सूत्र श्यामपट्ट पर लिख दिए जाते हैं। सूत्र बच्चों के पूर्व–ज्ञान से सम्बन्धी होते हैं। उन्हें विभिन्न शैलियों से भी परिचित करा अपनी रुचि व योग्यता के अनुसार शैली के चयन की स्वतंत्रता रहती है।
- **अनुकरण और आदर्श विधि :** निबन्ध, कहानी, ज्ञान आदि को छात्रों के सम्मुख प्रस्तुत किया जाता है। भाषा शैली की दृष्टि से श्रेष्ठ और सुन्दर आदर्श उनके समक्ष रखे जाते हैं। इस विधि का प्रयोग केवल प्रारम्भिक कक्षाओं में ही उपयुक्त रहता है।
- **वाद विवाद या तर्क विधि :** दो दलों में वाद–विवाद करने का अवसर देना। मौखिक वाद–विवाद के उपरान्त लिखने का आदेश देना।

पत्र लेखन सीखने की विधि

- **आदर्श विधि :** विद्यार्थियों के समक्ष पत्र का आदर्श नमूना प्रस्तुत किया जाता है। प्रारंभिक कक्षाओं में पत्र के विभिन्न अंगों तथा इन अंगों को लिखने की विधि को समझना कठिन है। अंतः यह प्रारम्भिक कक्षाओं में उपयोगी है।
- **खंडनः पत्र लेखन विधि :** इस विधि के अनुसार विद्यार्थियों के समक्ष पत्र के एक–एक खंड पर विचार किया जाता है।
- **खंडशः पत्र विश्लेषण विधि :** इस विधि में पत्र के विभिन्न खंडों पर एक–एक करके चर्चा की जाती है।
- **रुपरेखा विधि :** पत्र लेखन सीखने के लिए रुपरेखा विधि अपनाई जा सकती है।

शिक्षण विधियाँ

हिन्दी साहित्य की प्रत्येक विद्या के अपने शिक्षण उद्देश्य है। साहित्य की दृष्टि से हिन्दी भाषा को तीन भागों में और कर शिक्षा दी जानी चाहिए

1. गद्य शिक्षण 2. पद्य शिक्षण 3. व्याकरण

गद्य और पद्य में अन्तर

- गद्य में विरामादि चिन्हों के नियमों का विशिष्ट स्थान होता है, जबकि पद्य को इन नियमों में बद्ध नहीं किया जा सकता।
- पद्य में यति, गति और लय का विशेष महत्व है। गद्य में लय का कोई स्थान नहीं।
- पद्य रचना छन्दबद्ध या छन्दयुक्त हो सकती है, किन्तु गद्य हमेशा छन्दहीन रचना ही होती है।

गद्य शिक्षण

गद्य के शिक्षण उद्देश्य :

- कठिन शब्दों के अर्थ बताना एवं उनका वाक्य में उपयुक्त प्रयोग करना
- लोकोक्तियों, मुहावरों, सूक्तियों का अन्तर एवं अर्थ बताना एवं वाक्य में प्रयोग करना।
- गद्य में निहित भाव एवं विचरों को स्पष्ट करना।

गद्य की विधाएँ : नाटक, उपन्यास, कहानी, निबन्ध, जीवनी, आत्मकथा, संस्मरण, रेखचित्र, रिपोर्ताज, आलोचना आदि।

माध्यमिक कक्षाओं में गद्य शिक्षण के उद्देश्य

- सफल अभिव्यक्ति के साथ–साथ मौलिकता का विकास करना।
- छात्रों में भाषा का व्यावहारिक प्रयोग तथा सृजन शक्ति का विकास करना।

द्रुत वाचन

तीव्र गति से अध्ययन के कारण पुस्तक के मुख्य भाव ग्रहण करने में समय नहीं लगता है। पाठक अनुच्छेद को एक सार्थक इकाई मानकर पढ़ता है। यह वाचन का श्रेष्ठ कौशल है।

- मौन वाचन काठिन्य निवारण तथा पुनरावृत्ति प्रश्नों के पूछने से पूर्व कराया जाता है।
- कक्षा अध्यापन के समय केवल मौन पाठ ही कारया जाता है।
- सस्वर वाचन से उच्चारण संबंधित त्रुटियाँ देखी जा सकती है। मौन वाचन में इनका अभाव रहता है।

लेखन शिक्षण

- मौंटेसरी के अनुसार वाचन से पहले लेखन की शिक्षा दी जानी चाहिए।
- फ्रोबेल एवं गँधी के मतरनुसारी लिखने से पहले पढ़ना और वर्णमाला के अक्षरों को लिखने से पहले चित्रांकन सीखना चाहिए क्योंकि वाचन मानसिक जबकि लेखन शारीरिक व मानसिक दोनों प्रक्रिया है।

अक्षर रचना (लिखना) सीखने की विधियाँ :

- **सार्थक रेखाएं खींचने की विधि :** बालक को सर्वप्रथम रेखाएं खींचने की शिक्षा दी जानी चाहिए ताकि वह उन रेखाओं द्वारा वर्ण बनाना सीख सके। जैसे खड़ी पाई 'I' से 'आ' की मात्रा का निर्माण करना।
- **खंडशः लेखन विधि :** विद्यार्थी के लिए सम्पूर्ण अक्षर की रचना एक बार समझ पाना कठिन कार्य है। वर्ण को आरम्भ करने की विधि का ज्ञान बहुत आवश्यक है। लेखनी को किस ओर से किस और घुमाना है।

- **रेखा अनुसरण विधि :** यह विधि अत्यधिक प्राचीन और उपयोग विधि मानी जाती है। इस विधि के अंतर्गत अध्यापक विद्यार्थी का हाथ पकड़कर रेखाओं का अनुसरण करके वर्ण को उभारने में मदद करता है।
- **अनुलेख विधि :** इसके अंतर्गत कोई भी वर्ण सुन्दर एवं मोटे रुप में लिख दिया जाता है और विद्यार्थी इस वर्ण को देखकर इसका अनुलेखन करता है।
- **स्वतंत्र लेखन विधि :** इस विधि में वर्ण को बिना देखे या नकल किये बिना उसकी मानसिक चित्रछाया के अनुसार लिखा जाता है। कुशाग्र बुद्धि बालक बहुत कम समय में इस विधि को अपना लेते हैं।
- **मौंटेसी विधि :** इस विधि में लकड़ी, गत्ते एवं प्लास्टिक से बने वर्णो का प्रयोग किया जाता है और बालक द्वारा उस वर्ण के ऊपर उंगली फेरकर लिखने का अभ्यास किया जाता है।

भाषा की शिक्षा : मौंटेसरी विद्यालय के कार्यक्रम को विभाजित करने का आधार है।

मौन्टेसरी प्रणाली में लिखना सिखाने के लिए लेखनी पकड़ने का अभ्यास, अक्षरों का ध्वन्यात्मक विश्लेषण तथा अक्षरों का स्वरुप समझना प्रणालियों का प्रयोग किया जाता है।

- **पेस्टॉलोजी विधि :** इसमें पहले वर्ण लेखन में उपयोगी रेखाओं व वृत्तों का वर्गीकरण किया जाता है और उनके पीछे सार्थक रेखाएं खींचने का अभ्यास किया जाता है।
- **जेकाटाट विधि :** इसके अंतर्गत विद्यार्थी किसी वाक्य को लिखता है और तत्पश्चात् वही वाक्य बिना उसे देखे लिखता है। लिखने के बाद वह इस वाक्य के शब्दों को मूल वाक्य के शब्दों से मिलाता है। बालक को चित्र के नाम के पहले वर्ण को खंडश: लेखन सिखाया जाता है।
- **संश्लेषण विधि :** इस विधि के अंतर्गत पहले वर्ण लिखना सिखाया जाता है। उसके बाद उनसे बनने वाले शब्द फिर उन शब्दों से बनने वाले वाक्य सिखाया जाता है।
- **परंपरागत विधि :** इस विधि में सर्वप्रथम स्वर, व्यंजन उसके पश्चात् मात्राएं तथा शब्द उसके पश्चात् वाक्य लेखन का ज्ञान दिया जाता है।
- **समान आकृति वर्ण समूह विधि :** यह विधि पेस्टालॉजी की रचनात्मक विधि के समकक्ष है। इसमें वर्णो को समान–समूह में बांट लिया जाता है।

श्रुतलेख

श्रुतलेख में विद्यार्थी ध्वनियों को सुनकर लेख निबद्ध करता है। यह विद्यार्थी के लेखन क्षमता का मूल्याकंन करने की प्रक्रिया है।

श्रुतलेख के अभ्यास से लिखने में उचित–गति, बोलने वाले भाव को उपयुक्त संदर्भ में समझने की शक्ति, विराम का महत्व आदि को प्रकट करने का उचित अभ्यास मिलता है।

श्रुतलेख का उद्देश्य निदानात्मक है। प्राथमिक कक्षा में भाषा शिक्षण का 10-15% तथा बड़ी कक्षाओं में 3-5% समय श्रुतलेख के लिए दिया जा सकता है।

सुलेख

सुलेख की शिक्षा देने से पूर्व अध्यापक को वर्णो, मात्राओं, शब्दों, वाक्यों, पंक्तियों एवं विराम चिन्हों के मध्य उचित दूरी की शिक्षा देनी चाहिए। सुलेख लिखते समय विद्यार्थी के आंखों और लेखन आधार की दूरी लगभग एक से सवा फुट होनी चाहिए। पेंसिल या पेन की लंबाई बालक की एक वालिश्त के बराबर होनी चाहिए। पेन का पृष्ठ भाग तर्जनी अंगुली से 60^o के अंश पर झुका होना चाहिए।

रचना शिक्षण

इस विधा की मुख्य विशेषता लिखित अभिव्यक्ति है।

उद्देश्य :

- शब्दों, मुहावरों, लोकोक्तियों, सूक्तियों, विराम–चिन्हों आदि के यथास्थान प्रयोग का ज्ञान देना।
- साहित्य की विभिन्न शैलियाँ अभिधा, लक्षणा एवं व्यंजना तथा इनके प्रयोग का ज्ञान देना।
- रचनात्मक कुशलताओं का विकास करना।

माध्यम स्तर पर सर्जनात्मक अभिव्यक्ति

कहानी की उपदेयता

- स्मरण शक्ति का विकास
- मनोरंजन का सशक्त साधन
- मानव व्यवहार एवं चरित्र का परिचय
- तर्क, विवेक, संकल्प एवं कल्पनाशक्ति की अभिवृद्धि
- अवलोकन एवं निरीक्षण शक्ति का विकास
- सर्जनात्मकता का विकास
- भावाभिव्यक्ति की योग्यता का विकास
- वक्ता और श्रोता के बीच घनिष्ठता एवं आत्मीयता
- साहित्य विकास का उत्तम साधन।

कहानियों के प्रकार

- यथार्थवादी कहानियाँ
- आदर्शवादी कहानियाँ
- मिश्रित कहानियाँ (आदर्शोन्मुख यथार्थवाद)

उपन्यास शिक्षण

उपन्यास का शब्द अर्थ है 'निकट रखा हुआ'। कादम्बनी (बाणभट्ट कृत) भारत का पहला उपन्यास माना जाता है।

- उपन्यास जीवन और समाज की आलोचना है।
- उपन्यास के माध्यम से व्यक्ति के जीवन में उदातता आती है।
- उपन्यास से सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक चेतना जाग्रत होती है।

उपन्यास शिक्षण की विधियाँ

- **कहानी कथन प्रणाली :** इस प्रणाली में उपन्यास के कहानी एवं भाव को छात्रों को सुना दिया जाता है एवं कृति के साहित्य पक्ष की समालोचना विद्यार्थियों के सम्मुख प्रस्तुत की जाती है।
- **व्याख्यान प्रणाली :** इस विधि में उपन्यास की कथा के मुख्य बिन्दुओं पर चर्चा एवं प्रतिक्रिया व्यक्त की जाती है।
- **समीक्षा प्रणाली :** इस प्रणाली में कृति के सबल और दुर्बल पक्षों पर प्रासंगिक रुप से प्रकाश डाला जाता है।
- **स्वाध्याय प्रणाली :** उच्च कक्षाओं के लिए स्वाध्याय प्रणाली उचित है।
- **चित्र वर्णन :** प्राथमिक कक्षाओं के लिए मौखिक अभिव्यक्ति की सर्वाधिक उपयुक्त विधि।
- **महापुरुषों की जीवनियाँ एवं परियों की कहानियाँ :** छोटे बालकों की कल्पना–शक्ति विकसित करने माध्यम।
- **वर्णमाला में सरल से कठिन सिद्धांतों को अपनाने वाली विधि है :** कलम पकड़ने की विधि।

- **चित्र कथाएं :** प्राथमिक स्तर पर कहानी रचना के लिए सर्वाधिक उपयोगी सामग्री।

पद्य शिक्षण

पद्य शिक्षण के उद्देश्य :

- गति, लय आदि के अवरोह एवं आरोह का ज्ञान कराना।
- छन्द, अलंकार एवं रसों का ज्ञान कराना।
- कवितांश में निहित भाव की अनुभूति कराना।
- कविता की काव्यगत विशेषताओं आदि को बताना।

कविता शिक्षण

कविता शिक्षण के अंग: कविता शिक्षण के तीन प्रधान अंग हैं – वाचन, व्याख्या और भाव विशेषता।

कविता शिक्षण की प्रमुख विधियाँ :

- **गीत व अभिनय विधि :** कविता को गाकर तथा अभिनय से सिखाया जाता है।
- **अर्थ बोध विधि अथवा शब्दार्थ कथन विधि :** यह सर्वाधिक प्रचलित विधि है। इस विधि में कविता में आए कठिन शब्दों का अर्थ बताते हुए कविता पढ़ाई जाती है। कविता पढ़ाने की यह विधि सर्वाधिक दोषपूर्ण है। शब्दार्थो पर बल देने से कविता का पाठ शुष्क एवं गद्यवत हो जाता है।
- **प्रश्नोत्तर अथवा खण्डान्वय विधि :** पद्यांश के खण्ड–खण्ड करके प्रत्येक तथ्य, भाव या विचार के सम्बन्ध में प्रश्न पूछा जाता है और अभीष्ट उत्तर प्राप्त करते हुए संपूर्ण विषयवस्तु का परिचत छात्रों को करा दिया जाता है।
- **व्याख्या विधि :** अर्थ–बोध व शब्दार्थ विधि के समान ही व्याख्यान विधि है। व्याख्या में शिक्षक कविता सम्बन्धित अन्तर्कथा विस्तार में प्रस्तुत करता है।
- **व्यास विधि :** यह विधि उच्च कक्षाओं के लिए उपयुक्त है। इसमें शिक्षक कथावाचन की भाँति उदाहरण देते हुए व्याख्या करता है।
- **तुलना विधि :** इस विधि से काव्य के व्यापक अध्ययन की ओर ध्यान जाता है। तुलना शक्ति, विवेचन क्षमता और सहज गुणों एवं अवगुणों की परख कर समालोचना करने की क्षमता का विकास होता है। इस विधि का उपयोग भी उच्च कक्षाओं के शिक्षण में किया जाता है। विधि का प्रयोग चार प्रसगों में किया जाता है।
- सम–भाषा–कवि–तुलना,
- विभिन्न भाषा कवि–तुलना,
- भाव–तुलना,
- एक ही कवि समान भाव वाली कविताओं की तुलना।
- **समीक्षा विधि :** इसमें शिक्षक का अध्ययन कविता के अर्थ की व्याख्या के साथ–साथ साहित्यिक आलोचना सिद्धान्तों को भी स्पष्ट करना है।

इसमें शिक्षक का कार्य छात्रों को निर्देशन देना होता है। साधारणतः समीक्षा तीन प्रकार से की जाती है।

1. भाषा की समीक्षा
2. काव्यगत भाव की समीक्षा
3. उन सभी प्रभावों की समीक्षा करना जिनसे कवि को रचना करने में प्रेरणा तथा सहायता मिली है।

- छात्रों में साहित्यिक भाषा के समझने, बोलने तथा लिखने की शक्ति उत्पन्न करना।
- किसी साहित्यिक कृति को भाव और कला की दृष्टि से समझने तथा अपनी सम्मति प्रस्तुत करने की योग्यता का विकास करना।

गद्य शिक्षण की विधियाँ

गद्य शिक्षण की मुख्य विधियों में सूक्ष्म अध्ययन व स्थल अध्ययन सम्मिलित है। गद्य की इन विधियों का प्रयोग निम्न विभिन्न अंगों में बांटकर किया जाता है :

- **वाचन :** आदर्श वाचन, अनुकरण वाचन, सस्वर वाचन, मौन वाचन।
- **व्याख्या :** वाचन अध्ययन का यांत्रिक पक्ष है तो व्याख्या गद्यांश का भाव पक्ष है।
- **विचार विश्लेषण :** वाक्य भाषा की सबसे छोटी इकाई मानी गई है। वाक्य का अर्थ स्पष्ट करना, विचार विश्लेषण कहलाता है।
- **अर्थ–बोध विधि**
- **आदर्श विधि :** हर्बर्ट की पंचपदी ही आदर्श विधि के रुप में प्रयुक्त होती है।

नाटक शिक्षण

नाटक शिक्षण की निम्नलिखित विधियाँ हैं :

- **आदर्श वाचन विधि :** इस विधि में शिक्षक समस्त नाटक, एकांकी, लघु नाटिका आदि का पाठ कक्षा में स्वयं करता है। शिक्षक का स्वर भावनुकूल तथा पात्रानुकूल होता है। इस विधि में शब्दों तथा संदर्भो की व्याख्या नहीं की जाती है केवल रचनाकार के तथ्य संदर्भो की व्याख्या नहीं की जाती है केवल रचनाकार के तथ्य को प्रभावशाली ढंग से विद्यार्थियों तक सम्प्रषित करना होता है।

यह विधि कम खर्चीली और प्रत्येक परिस्थिति में अनुकूल है। छोटी कक्षाओं में इस विधि का प्रयोग आसानी से किया जा सकता है।

- **पात्रानुसार वाचन विधि :** इस विधि से तात्पर्य है कि विद्यार्थी पात्रों के संवादों को भावनुकूल पढ़ें। इस विधि में छात्र सक्रिय रहते हैं। छात्रों के व्यक्तित्व को परखने का अवसर इस विधि में मिलता है।
- **व्याख्या विधि :** इस विधि में अध्यापक नाटक के मात्रों के संवादों का वाचन स्वयं करता है। कठिन शब्दों, भावों और विचारों आदि की व्याख्या करता है। बीच–बीच में प्रश्न पूछता है। उच्च कक्षाओं के लिए यह प्रणाली लाभप्रद है।
- **कक्षा अभिनय विधि :** इस विधि में शिक्षार्थी विभिन्न प्रकार के पात्रों का अभिनय करते हैं। किन्तु सुविधाओं के अभाव में यह विधि नहीं अपनाई जा सकती।
- **रंगमंच अभिनय विधि :** कक्षा अभिनय विधि का उन्नत रुप है। इसमें अध्यापकों को एवं छात्रों को कला पक्ष का ज्ञान होता है। इस विधि का मुख्य दोष है कि यह प्रारम्भिक कक्षा के अनुकूल नहीं है।
- **यंत्र विधि :** इस विधि में यंत्र प्रणाली का प्रयोग मिश्रित रुप है।
- **मिश्रित विधि :** इस विधि के अनुसार अध्यापक सभी विधियों को मिलाकर नाटक शिक्षण करवा सकता है।

नाटक शिक्षण के उद्देश्य :

(1) स्थायी भावों से सम्बन्धित अनुभवों, संचारी भावों आदि का परिचय देना।

(2) परिस्थितिजन्य ज्ञान होना।

(3) स्थायी ज्ञान करवाना।

कहानी शिक्षण

इस विद्या की मुख्य विशेषता मौखिक अभिव्यक्ति है।

- **प्लेटो के अनुसार कहानी का अर्थ होता है :** 'शरीर के लिए भोजन तथा व्यायाम और मस्तिष्क के लिए कहानी एवं संगीत आवश्यक है।' इनके अनुसार कथा या कहानी शिक्षा का ही एक अंग है। अतः कहानी शिक्षा प्रदान करने से मानसिक संतुष्टि होती है साथ ही मनोरंजन भी होता है।

- **मुंशी प्रेमचंद के अनुसार :** 'कहानी एक ऐसी रचना है जिसमें जीवन के किसी एक अंग अथवा मनोभाव को प्रस्तुत करने का लेखक का उद्देश्य है। यह एक ऐसा सुन्दर उद्यान नहीं है, जिसमें भली–भाँति बेल–बूंटे, फल तथा फूल हो, वरन् यह एक ऐसा मामला हो, जिसमें एक ही पौधे का माधुर्य अपने सन्तुलन रुप में दृष्टिगोचर होता है।'

कहानी शिक्षण की विधियाँ

- **मौखिक कहानी कथन प्रणाली :** इस विधि में शिक्षक बच्चों को कहानी सुनाता है। छोटी कक्षाओं में यह प्रणाली उपयुक्त है।
- **चित्र प्रदर्शनी प्रणाली :** इस विधि में शिक्षक कहानी को विभिन्न चित्रों के माध्यम से छात्रों के सम्मुख प्रस्तुत करता है। यह विधि पूर्व प्राथमिक और प्राथमिक स्तर से अनुकूल है। इसमें बच्चों की कल्पना शक्ति का विकास होता है और पूछे गये बोध प्रश्नों से मौखिक अभिव्यक्ति को अवसर प्राप्त होता है।
- **अधूरी कहानी पूर्ति :** इस विधि में विद्यार्थियों को कहानी के अंशों को बता दिया जाता है। बीच के अंशों की पूर्ति छात्र स्वयं करता है। कल्पना शक्ति का विकास होता है।
- **वाचन प्रणाली :** इस विधि में अध्यापक सम्पूर्ण कहानी को पढ़कर सुनाता है। विद्यार्थी मौन रुप से कहानी को पढ़ते और सुनते हैं। कहानी शिक्षण की यह विधि उद्देश्य पर निर्भर है।
- **गहन अध्ययन प्रणाली :** यह प्रणाली भाव प्रधान, मनोवैज्ञानिक और विचारप्रधान है। इस विधि में शिक्षक कठिन शब्द, नये विचार, नये शब्द व अन्य विधाओं की समुचित व्याख्या करता है। यह सभी प्रकार की कहानियों के लिए उपयुक्त है।

द्रुत अध्ययन एवं कहानी शिक्षण प्रविधि :

- **द्रुत अध्ययन या द्रुत पाठ :** इसको शिक्षण–प्रक्रिया का सहायक प्रविधि भी कहा जाता है।
- **कहानी शिक्षण :** अन्तर्कथा से सम्बन्धित कर पाठ्यवस्तु शिक्षण में प्रयुक्त।
- **प्रत्यक्ष भाषा शिक्षण विधि :** व्याकरण–शिक्षण की उत्तम विधि मानी जाती है। इसमें नियमों को पढ़ने, समझने की आवश्यकता नहीं होती है।
- **अनुवाद विधि :** भाषा सीखने से पूर्व व्याकरण सिखाया जाता है।
- **भाषा संसर्ग विधि :** इसमें व्याकरण के व्याहारिक पक्ष पर अधिक बल दिया जाता है।
- **समवाय विधि :** इसमें व्याकरण की शिक्षा लम्बीय समयवाय के द्वारा दी जाती है।
- **संरचनात्मक पद्धति :** हिन्दी शिक्षण में एक अधुनातन विधि है क्योंकि इसमें सभी परंपरागत शिक्षण विधियों की कमियों को दूर किया गया यह पद्धति भाषा शिक्षण के मनोवैज्ञानिक आधारों पर संगठित है।

इस पद्धति में वाक्य आधार बनाकर दिया जाता है और उसकी सहायता से विशेष व्याकरण नियम, उसके गठन एवं शब्दावली का अभ्यास कराया जाता है। यह भाषा शिक्षण की नवीन मान्यता वाक्य विचार की इकाई पर आधारित है।

इस पद्धति में लिपि की सहायता के बिना ही सुनने व बोलने पर जोर दिया जाता है। यह पद्धति रटने की अपेक्षा अभ्यास पर आधारित है।

- **व्यावहारिक व्याकरण शिक्षण विधि :** व्यावहारिक व्याकरण में शुष्क नियमों को कण्ठस्थ करने की आवश्यकता नहीं पड़ती। व्यावहारिक व्याकरण में प्रचुर अभ्यास (ड्रिलिंग) शिक्षण का आधार है। रोचक एवं आकर्षक विधि है।

व्यावहारिक व्याकरण शिक्षण विधि की विशेषताएँ :

- रटने की अपेक्षा समझने पर अधिक बल दिया जाता है।
- छात्रों को अभ्यास द्वारा सिखाया जाता है।
- करके सीखने (सक्रियता) के सिद्धान्त का अनुसरण करते हैं।
- निदानात्मक शिक्षण को महत्व दिया जाता है और सुधारात्मक शिक्षण करते हैं।
- व्याकरण शिक्षण के पाठ तीन प्रकार के होते हैं।

अनुवाद शिक्षण की विधियाँ

- **पुस्तक विधि :** पहले सरल वाक्यों का अनुवाद दिया जाता है। इसके बाद जटिल तथा मिश्रित वाक्यों का अनुवाद दिया जाता है।
- **आगमन–निगमन विधि :** इस विधि के मुख्य चार तत्व होते हैं – उदाहरणः अवलोकन नियम तथा उपयोग। अंग्रेजी में अनुवाद सीखने के लिए पहले हिन्दी वाक्यों के दुभाषियें की भूमिका निर्वाह करना होता है तथा शिक्षण के लिए यह विधि अधिक उपयोगी है।
- **तुलना एवं अनुकरण विधि :** यह अनुवाद विधि छात्र केन्द्रित है तथा मनोवैज्ञानिक है। इस विधि में समय अधिक लगता है और छात्रों के शिक्षण में प्रयुक्त नहीं किया जा सकता है।

प्रोजेक्ट पद्धति

हिन्दी शिक्षण में उपयोगिता : प्रोजेक्ट पद्धति सीखने के नियमों–तत्परता का नियम प्रभाव के नियम तथा अभ्यास के नियम तीनों ही आधारित है। यह विधि शिक्षण में बालकों द्वारा कविताओं का संकलन करवाना, रिपोर्ताज लिखना एवं यात्रा संस्मरण के अध्ययन में उपयोगी है।

परिष्कारात्मक शिक्षण

अर्थः किसी समस्या के कारणों का पता लगाकर उनको दूर करना या मिटाना।

ब्लेयरः "परिष्कारात्मक शिक्षण बालकों की दो प्रकार की कमियों–उनमें बुरी आदतों की उपस्थिति और अच्छी आदतों का अभाव–से संबंधित है।"

पर्यवेक्षित विधि (निदर्शित स्वाध्याय)

- **किलरः** निदर्शित स्वाध्याय वह शिक्षण–विधि है जिसमें प्रेरणा, योग्य निर्देश व आवश्यक सहायता के माध्यम से प्रत्येक विद्यार्थी को अपनी सभी शैक्षणिक वृत्तियों में कुशल व आत्मनिर्भर बनाने का उद्देश्य निहित रहता है।"
- **किलजर व मैक्सवैल :** "विद्यार्थियों के शांतिपूर्ण अध्ययन व प्रयोगशालीय क्रियाओं के बहिःपक्षीय दर्शन और प्रभावपूर्ण दिशा–निर्देशन का नाम ही निदर्शित स्वाध्याय प्रणाली है।"
- **सम्मेलन योजना :** बालकों की व्यक्तिगत कठिनाइयों का निवारण पूरे सम्मेलन में किया जाता है।
- **विशिष्ट अध्यापक योजना :** एक विशिष्ट अध्यापक बालकों के दोषों, उनकी भ्रान्ति धारणाओं एवं कठिनाइयों को दूर करता है।
- **विभाजित कालांश योजना :** इस विधि में एक ही कालांश के अन्तर्गत दो अध्यापक बालकों के कार्यो का निरीक्षण करते हैं।

श्रव्य साधन

- **व्याख्या :** किसी शब्द या वाक्यांश को खंड–खंड करके बोधगम्य बनाना। इस युक्ति का उपयोग दुरुहता को सरलता में परिवर्तित करने की दृष्टि से ही किया जाता है।
- **संस्मरण :** अपने जीवन में घटित हुई घटना को दूसरों को सुनाना ही संस्मरण हैं
- **निदर्शना :** इस युक्ति के उपयोग की दृष्टि से जहां विषय या प्रकरणगता जितनी अधिक क्लिष्टता होगी, वहाँ इस युक्ति के

उपयोग की उतनी ही अधिक आवश्यकता होगी। इसमें किसी अंश या कठिन बात को मौखिक रुप से या प्रत्यक्ष दिखाकर उसका अर्थ स्पष्ट करना।

- **वर्णन** : भाषायी शिक्षण में वर्णन युक्ति की जो गुंजाइश गद्य या कहानी है, वह अन्य विद्याओं के शिक्षण में नहीं।
- **दृष्टांत** : स्वयं देखी हुई घटना को दृष्टांत कहते हैं, यह मौखिक होता है।
- **लघु कथा** : पाठ के कठिन अंशों को स्पष्ट करने हेतु उनको माध्यम बनाया जाता है।

कविता शिक्षण में प्रविधियाँ

- **निश्चित विषय पर काव्य पाठ** : छात्र निश्चित विषय पर ढूंढकर कविता याद करें और अध्यापक को पक्षपात रहित होकर उत्तर कविता को पुरस्कार देना चाहिए।
- **वाचन प्रतियोगिता** : जो छात्र सबसे उत्तम कविता को वाचन करें, उसे पारितोषिक देकर उत्साहित किया जाए।
- **उत्सवों पर कविता पाठ** : महत्वपूर्ण उत्सवों पर भी छात्रों से कविता पाठ कराना लाभदायक होता है।
- **काव्य–संग्रह पुस्तिका** : आधुनिक पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित होने वाली सुन्दर कविताओं का संग्रह कलापूर्ण ढंग से किया जाए।
- **अन्त्याक्षरी** : अन्त्याक्षरी प्रतियोगिता का सबसे बड़ा लाभ यह है कि छात्र अपने दल को जिताने के उद्देश्य से अनेक कविताएँ कण्ठस्थ कर लेते हैं। बालकों के काव्यों के प्रति रुचि भी उत्पन्न होती है।
- **कवि दरबार** : कवि दरबार में छात्र विभिन्न कवियों की वेशभूषा से सुसज्जित होकर उन्हीं कवियों की कविता का सस्वर पाठ करते हैं।
- कविता शिक्षण में उत्प्रेरणात्मक उपक्रम के लिए सर्वाधिक उपयुक्त विधि समभावी कविता प्रस्तुत है।
- कविता पाठ करने से छात्र में मौखिक अभिव्यक्ति का विकास होता है।

व्याकरण शिक्षण

मौखिक और लिखित भाषा में नियमितता और स्थिरता लाने के लिए जो नियम प्रयुक्त किये जाते हैं उन्हें व्याकरण कहते हैं। इस विद्या की मुख्य विशेषता भाषायी विधान है।

- **डॉ. स्वीट** : "व्याकरण भाषा का व्यावहारिक विश्लेषण है।"
- **जैगर** : "प्रचलित भाषा संबंधी नियमों की व्याख्या ही व्याकरण है।"
- **पतंजलि** : "व्याकरण शब्दों के प्रयोग का अनुशासन है (शब्दानुशासन)!"
- **व्याकरण के शिक्षण उद्देश्य**

1. व्याकरण के विभिन्न अवयवों यथा – संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, विशेषण आदि का ज्ञान देना।
2. प्रत्ययों, उपसर्गो आदि का ज्ञान देना।

व्याकरण की विशेषताएँ

- भाषा की शुद्धता का साधन है साध्य नहीं है।
- भाषा का अंश रक्षक तथा अनुशासक है।
- भाषा के स्वरुप की सार्थक व्यवस्था करता है।
- भाषा का शरीर विज्ञान है तथा व्यावहारिक विश्लेषण करता है।
- गद्य–साहित्य का आधार व्याकरण है।
- भाषा की मितव्यता व्याकरण से होती है।

व्याकरण के प्रकार

चौमस्की में एक नवीन व्याकरण का विकास किया है। जिसे व्यावहारिक व्याकरण की संज्ञा दी जाती है।

व्याकरण के तीन प्रकार :

1. शास्त्रीय या सैद्धान्तिक व्याकरण
2. व्यावहारिक व्याकरण
3. प्रासंगिक व्याकरण

- **शास्त्रीय या सैद्धान्तिक व्याकरण:** व्याकरण के नियमों को विशेष महत्व दिया जाता है इसमें भाषा की शुद्धता को प्राथमिकता दी जाती है।
- **व्यावहारिक व्याकरण:** इसमें भाषा की शुद्धता की अपेक्षा सम्प्रेषण की बोधगम्यता को महत्व दिया जाता है।
- **प्रासंगिक व्याकरण:** इस व्याकरण में सम्प्रेषण की प्रभावशीलता एवं अभिव्यक्ति पर विशेष ध्यान देते हैं। कक्षाओं में इस प्रयोग व्यावहारिक नहीं है। आगमन को पूरकविधि के रुप में प्रयुक्त करना चाहिए।
- **सूत्र प्रणाली** : व्याकरण के नियम सूत्र रुप से रटा दिए जाते हैं। यह प्रणाली अमनोवैज्ञानिक और परम्परागत संस्कृत–शिक्षण की ही है। इस प्रणाली से भाषा के प्रयोग का ज्ञान ओर अभ्यास नहीं हो पाता।
- **पाठ्यपुस्तक प्रणाली** : यह पूर्णतः अमनोवैज्ञानिक विधि है। इस प्रणाली में भी व्याकरण की पुस्तक में दी गई परिभाषाएँ और सिद्धान्त रटा दिए जाते हैं।
- **आगमन–विधि** : आगमन विधि मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों पर आधारित है। यह निगमन विधि से विपरीत विधि है। इसमें पहले प्रयोग बताया जाता है व बाद में विद्यार्थी स्वयं नियमों की खोज करते हैं। इसके तीन पद हैं। नियमीकरण, अवधान व निरीक्षण। इस विधि में सीखने को विशेष महत्व दिया जाता है। इस विधि से छात्रों की सर्जनात्मक योग्यता का विकास होता है। इस विधि को उदाहरण नियम विधि भी कहते हैं। आगमन विधि के दो प्रकार हैं –
- **प्रयोग प्रणाली** : व्याकरण पढ़ाते समय छात्रों के सम्मुख पहले उदाहरण रखे जाते हैं। उन्हीं के द्वारा सिद्धान्त या नियम निकलवाए जाते हैं। इसके निम्न पाद हैं।
- **तुलना एवं विश्लेषण** : उदाहरणों की परस्पर तुलना करना, विश्लेषण करना और उनसे व्यक्त समान लक्षणों एवं विशेषताओं को समझना।
- **नियमीकरण या निष्कर्ष** : लक्षणों एवं विशेषताओं के आधार पर नियम, निष्कर्ष या परिभाषा निकालना।
- **प्रयोग और अभ्यास:** निकले गए निष्कर्ष या नियम की पुष्टि के लिए अनेक प्रयोग करना और उसका अच्छी तरह अभ्यास करनाद्य
- **सह–सम्बन्ध विधि** : व्याकरण के नियमों को अधिक विधि का व्यावहारिक है। इस विधि में उनकी सार्थकता
- **आगमन–निगमन विधि** : यह सर्वाधिक प्रभावशाली विधि है। आगमन विधि द्वारा छात्र नियमों की खोज करते हैं व निगमन विधि द्वारा उन नियमों का अभ्यास करते हैं।
- **तुलना** : लगभग समान आकृति वाली दो वस्तुओं की समानताओं व विभिन्नताओं को एक साथ स्पष्ट करना।
- **आख्यान:** शिक्षण में युक्ति अधिक उपयुक्त रहती है। भाषाओं की विभिन्न विद्याओं–विशेषकर गद्य पाठों में तथ्य प्रदान पाठ हो सकते हैं। किसी शोध, दृश्य, कथन या घटना का तथ्यात्मक विवरण।

- **अंतर्कथा :** साहित्य शिक्षण में जब तक अन्तर्कथाओं वगैरह को स्पष्ट न किया जाये, तब तक न तो पाठ ही रुचिकर बन पाता है और न ही समझ में आता है। यह केवल चालू प्रसंग तक की सीमित रहती है, इसका रुप कुछ भी हो सकता है।
- **उदाहरण:** इसका उपयोग प्रत्येक विषय में और अन्य युक्तियों की अपेक्षा कुछ अधिक ही होता है।
- **स्टीरियो।**
- **टेप रिकॉर्डर।**
- **ग्रामोफोन:** यह चाबी से चलने वाली मशीन है।
- **भाषा तंत्र:** इसकी सर्वाधिक उपयोगिता किसी भी भाषा की ध्वनियों की शिक्षा देने में है।
- **रेडियो :** इससे शिक्षण संबंधी कोई भी कार्यक्रम एक समय में सभी जगह प्रसारित किया जा सकता है।
- **उपमा:** इसका प्रयोग किसी अज्ञात वस्तु की समानता ज्ञात करने में किया जाता है।
- मुहावरे, सूक्तियाँ व लोकाक्तियाँ।

दृश्य–श्रव्य साधन

यह वे साधन है जिनमें छात्रों की दृश्य–श्रव्य दोनों प्रकार की इंद्रियों का एकसाथ प्रयोग होता है। उदाहरण–टेलीविजन, चलचित्र, नाटक आदि।

हिन्दी में गृहकार्य

गृहकार्य की आवश्यकता भाषा शिक्षण में अभ्यास हेतु आवश्यकता है। गृहकार्य का स्वरुप शिक्षा के उद्देश्य, बालक की रुचि स्तर एवं योग्यता के अनुसार होना चाहिए।

प्राथमिक स्तर पर

प्राथमिक स्तर पर गृहकार्य में मुखर वाचन एवं शुद्ध वाचन पर बल देना चाहिए।

लेखन सम्बन्धी कार्य में पाठ्यपुस्तक के किसी अंश का सुलेख अभ्यास के लिए एवं लेखन गति सुधारने हेतु पठित अंश से एक पृष्ठ श्रुतिलेख के लिए देना चाहिए।

माध्यमिक स्तर पर

माध्यमिक स्तर पर गृहकार्य में समाचार–पत्र एवं पत्रिकाओं के किसी भाग को अनुलेख करने के लिए देना चाहिए।

सुलेख सम्बन्धी गृहकार्य हेतु लिपि को कलात्मक ढंग से लिखने का अभ्यास देना चाहिए।

श्रुतिलेख हेतु आकाशवाणी से समाचार सुनकर लिखना, भाषण के मुख्य अंश लिखना आदि देना चाहिए।

- शब्द व्याख्या की विधियाँ–उद्बोधन विधि, स्पष्टीकरण विधि और प्रवचन विधि।
- बालक का परिवार में ज्ञान प्राप्त करता है – मातृभाषा का।
- संवाद पाठ शिक्षण में सर्वाधिक प्रभावशाली उद्योतन सामग्री है – मौखिक उदाहरण।
- माध्यमिक स्तर हेतु उपयोगी शिक्षा प्रणाली – प्रबोधन, प्रवचन, विचार–विमर्श, निर्देशन, रुपरेखा प्रणाली।
- अविभक्त इकाई शिक्षण व्यवस्था में मूल्यांकन किया जाता है – पाठ के अध्ययन के बाद तथा अध्ययन के दौरान।
- विद्यालयी पाठ्यक्रम में मातृभाषा के स्वरुप है – प्रथम स्वरुप में वह स्वयं एक विषय है तथा द्वितीय स्वरुप में यह अन्य विषयों को पढ़ाने का माध्यम है।
- **भाषा यंत्र प्रणाली –** उच्च प्राथमिक कक्षाओं के लिए उपयोगी।

इसके चार साधन है – भाषा रिकॉर्डर (लिग्वाफोन), सहायक पुस्तक, वर्णन चित्र, ग्रामोफोन मशीन।

- **उद्बोधन प्रणाली –** उच्च प्राथमिक शिक्षा के लिए उपयोगी प्रणाली। इसमें अध्यापक छात्रों को चित्र दिखाकर प्रश्न पूछता है।
- **विपर्यय –** शब्दों के अक्षरों का स्थान परिवर्तित होना।
- **पठन–शिक्षण का आधार –** शुद्ध वाचन और श्रवण।
- **भाषा शिक्षण का आधार –** शुद्ध वाचन और श्रवण।
- **मदनमोहन मालवीय –** 'मोहन–पिटारी' विधि का नामकरण इनके नाम पर किया गया।
- **स्वीट** – "ध्वन्यात्मक शब्दों द्वारा विचारों का प्रकटीकरण ही भाषा है।"

"व्याकरण भाषा का व्याहारिक विश्लेषण है।"

- **ल्यूइस –** "वाचन एक साधन है जिसके माध्यम से बालक संपूर्ण मानवती के द्वारा संचित ज्ञान राशि से परिचित हो सकता है।"